Serving Education for Last 40 Years

NEERAJ®

M.H.D. - 17

भारत की चिंतन परंपराएँ और दलित साहित्य

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Manish Kumar*

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

भारत की चिंतन परंपराएँ और दलित साहित्य

Question Paper—June-2023 (Solved) 1
Question Paper—December-2022 (Solved) 1-2
Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved) 1
Question Paper—Exam Held in August-2021 (Solved) 1
Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved) 1
Question Paper—December, 2019 (Solved) 1
Question Paper—June, 2019 (Solved) 1-2
Question Paper—December, 2018 (Solved) 1-3
Question Paper—June, 2018 (Solved) 1-2
Question Paper—December, 2017 (Solved) 1
Question Paper—June, 2017 (Solved) 1-2

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

बुद्धकालीन साहित्य परंपरा

1. अश्वघोष 1
2. दिङ्नाग और आर्य नागार्जुन 17
3. असंग और वसुबन्धु 31
4. धर्मकीर्ति 44

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

लोकायत परंपरा (मानवतावादी साहित्य)

5. चार्वाक/लोकायत दर्शन 55

6. मिलिन्द और नागसेन 64

सिद्ध और नाथ परंपरा

7. सरहपा तथा चौरासी सिद्ध 76

8. महानुभाव पंथ 87

9. वीरशैव पंथ 96

10. नाथ पंथ 108

संत साहित्य परंपरा

11. कन्नड़ की संत भक्ति परंपरा 117

12. तेलुगु संत परंपरा 128

13. निर्गुण संत परंपरा 134

■ ■

Sample Preview
of the
Solved
Sample Question
Papers

Published by:

NEERAJ
PUBLICATIONS
www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2023

(Solved)

भारत की चिंतन परंपराएँ और दलित साहित्य

M.H.D.-17

समय : 2 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 50*

नोट : *पाँच प्रश्नों के निर्देशानुसार उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं। अंतिम प्रश्न अनिवार्य है।*

प्रश्न 1. कन्नड़ की भक्ति-साहित्य परंपरा का परिचय दीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-121, प्रश्न-1

प्रश्न 2. तेलुगु संत-काव्य की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-132, प्रश्न-2

प्रश्न 3. वीर शैव पंथ के सिद्धांतों का उल्लेख करते हुए इसकी सामाजिक चेतना पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-9, पृष्ठ-101, प्रश्न-2, पृष्ठ-104, प्रश्न-4

प्रश्न 4. वचन साहित्य की विशेषताओं को लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-118, 'वचन साहित्य'

प्रश्न 5. निर्गुण-काव्य की प्रवृत्तियों का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-13, पृष्ठ-135, 'निर्गुण संत कवियों का सामाजिक पक्ष'

प्रश्न 6. भारतीय दर्शन-परंपरा के संदर्भ में चार्वाक दर्शन की महत्ता पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-55, 'भारतीय दर्शन परंपरा और चार्वाक मत'

प्रश्न 7. सरहपा और चौरासी सिद्ध-परंपरा का ऐतिहासिक महत्त्व बताइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-76, 'सिद्ध संप्रदाय : ऐतिहासिक परिवेश', पृष्ठ-77, 'चौरासी सिद्ध : सामाजिक आधार', पृष्ठ-84, प्रश्न-6

प्रश्न 8. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) महानुभाव पंथ दर्शन।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-90, प्रश्न-1, प्रश्न-2

(ख) नाथ पंथ।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-108, 'नाथ साहित्य : परिचय व ऐतिहासिकता'

(ग) आर्य नागार्जुन।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-27, प्रश्न-5

(घ) संत-काव्य।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-13, पृष्ठ-136, प्रश्न-2

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

December – 2022

(Solved)

भारत की चिंतन परंपराएँ और दलित साहित्य

M.H.D.-17

समय : 2 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 50*

नोट : *पाँच प्रश्नों के निर्देशानुसार उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं। अंतिम प्रश्न अनिवार्य है।*

प्रश्न 1. बुद्ध के समय की सामाजिक एवं राजनीतिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-5, प्रश्न-1

प्रश्न 2. बौद्ध दर्शन ने भारतीय साहित्य को किस प्रकार प्रभावित किया है? विचार कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-7, प्रश्न-2

प्रश्न 3. बौद्ध विद्वानों ने किस प्रकार बुद्ध की चिन्तनधारा को विकसित किया है? विवेचना कीजिए।

उत्तर–परिवर्तन संसार का नियम है। प्रतिक्षण इस विश्व में परिवर्तन होते रहते हैं। यह परिवर्तन वैचारिक भी होते हैं, क्योंकि मनुष्य ही सर्वाधिक चेतन प्राणी है। ई.पू. छठी शताब्दी एक ऐसी शताब्दी थी जब समाज में कर्मकाण्डों एवं यज्ञों की प्रधानता थी। चारों तरफ झूठ, कपट, छल, हिंसा तथा पाखण्ड का साम्राज्य था। ऐसी स्थिति को बदलने के लिए महान परिवर्तनों की आवश्यकता थी, जो बौद्ध धर्म के उदय के साथ-साथ हुए। ऐसे ही संक्रमण काल में बौद्ध धर्म का उदय हुआ। बौद्ध दर्शन में जनसामान्य के हित को ध्यान में रखते हुए नये सिद्धांतों का प्रतिपादन किया गया।

बौद्ध शिक्षाओं का मुख्य उद्देश्य व्यति के मोक्ष या निर्वाण को सुरक्षित रखना था। बौद्ध धर्म ने औरतों व शूद्र के लिए दरवाजे खोल कर समाज मे एक नयी शुरुआत की। बौद्ध धर्म ने लोगों के बीच राष्ट्रीयता का प्रचार किया। बौद्ध भिक्षुओं ने पालि को संस्कृत के साथ मिलकर एक नई भाषा का निर्माण किया जिसे संकर संस्कृत कहा गया।

प्रमुख बौद्ध विद्वान निम्न हैं–

असंग और वसुबंधु–असंग और वसुबंधु दोनों भाई थे तथा वे पाकिस्तान मे पेशावर से थे। वे योगाचार व अभिधम्म की शिक्षाओं के समर्थक थे। वसुबंधु की सबसे महत्वपूर्ण कृति अभिधर्ममोक्ष थी।

अश्वघोष–कालिदास की तरह अश्वघोष महान भारतीय कवि थे। वास्तव में वह प्रथम संस्कृत नाटककार थे। वह कुषाण के राजा कनिष्क के दरबार में राजसभा लेखक व धार्मिक सलाहकार के रूप मे कार्य करते थे। इनके प्रमुख कृतियाँ हैं–महालंकारा, सौंदरानंदकाव्य (नन्द के जीवन की व्याख्या) और बुद्धचरित।

बुद्धघोष–बुद्धघोष के नाम का अर्थ है बुद्ध की आवाज। वह लगभग 5वी सदी तक जीवित रहे और एक महान पालि विद्वान थे। इन्हें तेहरवाद को सबसे महत्वपूर्ण टीकाकार मे से एक माना जाता था और इसके जीवन के बारे में महवांसा और बुद्धघोसूप्प्ट्टी में बताया गया है। बुद्धघोष मगध राज्य से श्रीलंका गए और वहीं बस गए। इनकी सबसे महत्वपूर्ण कृति विसुद्धिमग्गा है।

चंद्रकीर्ति–वह नालंदा विश्वविद्यालया में एक विद्वान थे और नागार्जुन के शिष्य थे। इनकी प्रमुख कृति प्रसन्नपदा थी।

धर्मकीर्ति–वह लगभग 7वीं सदी तक जीवित रहे और बौद्ध संक्य के विचारक थे। वह कवि के साथ नालंदा विश्वविद्यालय में अध्यापक भी थे। वैध अनुभूतियों पर सात संधियाँ धर्मकीर्ति द्वारा लिखी गईं थीं।

दिन्नग–इन्हें बौद्ध तर्क के संस्थापक के तौर पर जाना जाता है।

नागार्जुन–नागार्जुन सातवाहन राजा गौतमीपुत्र के समकालीन थे। वह महायान बौद्ध धर्म के माध्यमिक विद्यालय के संस्थापक थे। इनकी सबसे प्रमुख कृति है–मूलमध्यमककारिक। इसका अर्थ है बीच पग पर मौलिक छंद। इन्होने एक सिद्धांत का प्रचार किया जिसे शून्यवाद के नाम से जाना गया।

प्रश्न 4. अश्वघोष की कृतियों की भाषा-शैली, वस्तु योजना तथा प्रकृति-चित्रण पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-5, 'अश्वघोष की कृतियों की भाषा-शैली', 'वस्तु योजना तथा प्रकृति चित्रण'

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS
www.neerajbooks.com

भारत की चिंतन परंपराएँ और दलित साहित्य

बुद्धकालीन साहित्य परंपरा

अश्वघोष 1

परिचय

परिवर्तन संसार का नियम है। प्रतिक्षण इस विश्व में परिवर्तन होते रहते हैं। यह परिवर्तन वैचारिक भी होते हैं, क्योंकि मनुष्य ही सर्वाधिक चेतन प्राणी है। ई.पू. छठी शताब्दी एक ऐसी शताब्दी थी जब समाज में कर्मकाण्डों एवं यज्ञों की प्रधानता थी। चारों तरफ झूठ, कपट, छल, हिंसा तथा पाखण्ड का साम्राज्य था। ऐसी स्थिति को बदलने के लिए महान परिवर्तनों की आवश्यकता थी, जो बौद्ध धर्म के उदय के साथ-साथ हुए। ऐसे ही संक्रमण काल में बौद्ध धर्म का उदय हुआ। बौद्ध दर्शन में जनसामान्य के हित को ध्यान में रखते हुए नये सिद्धांतों का प्रतिपादन किया गया। ऐसे समय में व्यापक परिवर्तनों के लिए बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार आवश्यक था और यह कार्य अश्वघोष की कृतियों ने बखूबी पूरा किया। अश्वघोष ने अपनी कृतियों के माध्यम से बौद्ध दर्शन को जनता के सामने रखा।

प्रस्तुत अध्याय महाकवि अश्वघोष से सम्बन्धित है। इस अध्याय में ईसा पूर्व छठी शताब्दी में उत्तर भारत की स्थिति (सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा धार्मिक), बौद्ध धर्म का उदय एवं विकास, अश्वघोष की जीवनी, स्थिति-काल एवं कृतित्व, दार्शनिक कवि अश्वघोष, अश्वघोष की कृतियों की भाषा-शैली, वस्तु-योजना तथा प्रकृति-चित्रण तथा तत्कालीन स्थिति पर अश्वघोष का प्रभाव जैसे विषयों पर प्रकाश डाला गया है।

अध्याय का विहंगावलोकन

ईसा पूर्व छठी शताब्दी में उत्तर भारत की स्थिति

इस काल में उत्तर भारत के मध्य गंगा घाटी में अनेक धार्मिक सम्प्रदायों का उदय हुआ, जिनमें सबसे प्रमुख बौद्ध एवं जैन धर्म थे। इन धार्मिक सम्प्रदायों के उदय के अनेक कारण थे। इन धार्मिक सम्प्रदायों ने वैदिक ब्राह्मण धर्म के दोषों पर प्रहार किया। इन आंदोलनों को सुधारवादी आंदोलन भी कहा गया है। रोमिला थापर ने इस शताब्दी को विश्वव्यापी प्रश्नों की शताब्दी माना है। यह व्यापक विचार-विमर्श तथा वाद-विवाद का युग था, जिसमें प्रत्येक सिद्धांत को तर्क की कसौटी पर परखा गया था।

सामाजिक स्थिति

ई.पू. छठी शताब्दी में समाज में जाति प्रथा विद्यमान थी। समाज चार वर्णों में विभक्त था–ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र। इसके अतिरिक्त विभिन्न जातियों का सामाजिक जीवन में भी महत्त्वपूर्ण स्थान था। इस काल में निम्न वर्ग एवं शूद्रों की स्थिति काफी खराब थी। चाण्डाल को सर्वाधिक घृणित जाति माना जाता था। यह जाति नगर के बाहर निवास करती थी। पुक्कसों का कार्य फूल तोड़ना, निषादों का कार्य शिकार करना तथा नाईयों का कार्य बाल काटना था। इस काल में दास-प्रथा भी विद्यमान थी। निम्न जातियों को अधिक अधिकार प्राप्त नहीं थे। ब्राह्मणों एवं क्षत्रियों को वे सब कर नहीं देने पड़ते थे, जो निम्न वर्णों को देने पड़ते थे। यज्ञों के समय राजा ब्राह्मणों का सहयोग लेता था। शासक वर्ग के प्रतिनिधि क्षत्रिय थे। क्षत्रिय रक्त की शुद्धता पर अत्यधिक बल देते थे। इस काल में क्षत्रिय एवं वैश्य ब्राह्मणों से घृणा करने लगे थे। लोहे के उपयोग के कारण सैनिक साजो-सामान तथा अस्त्र-शस्त्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन आया। अजात शत्रु के पास महाशिलाकण्टक तथा रथमूसल जैसे भयंकर अस्त्र थे, जो अत्यधिक नरसंहार करते थे। इस काल में क्षत्रिय लोग ब्राह्मणों के विरुद्ध अपनी सामाजिक एवं राजनीतिक महत्ता के प्रति सचेत हुए। समाज में अव्यवस्था को समाप्त करना, झगड़ों को निपटाना तथा कृषि-भूमि की सुरक्षा करना आदि क्षत्रियों के प्रमुख कर्त्तव्य थे। ब्राह्मणों ने राजा को ईश्वर का प्रतिनिधि घोषित करके स्वयं को धरती का देवता कहा। बुद्ध

www.neerajbooks.com

ने जाति-प्रथा को अस्वीकार कर दिया। बौद्ध धर्म में छोटे-बड़े का कोई भेद नहीं था। बौद्ध धर्म मे सभी जातियों के लोग शामिल हो सकते थे। ईसा पूर्व छठी शताब्दी में समाज में स्त्रियों की स्थिति अच्छी नहीं थी। शहरों के जन्म तथा जाति भेद की उग्रता के कारण पुराने कबीलाई परिवार टूट गये, जिसके द्वारा उपेक्षित महिलाओं के एक समूह ने वेश्यावृत्ति को अपना लिया। प्राचीन बौद्ध साहित्य में ऐसी वेश्याओं का उल्लेख किया गया है, जो नगरों में निवास करती थीं। ब्राह्मणवादी विधि-निर्माताओं ने वेश्यावृत्ति की आलोचना की है, जिनमें बौद्धायन एवं आपस्तंब प्रमुख हैं। परन्तु बौद्ध संघ में महिलाओं को भी स्थान दिया जाता था तथा बौद्ध संघ में वेश्याओं को भी प्रवेश की अनुमति थी। बुद्ध वेश्याओं से घृणा नहीं करते थे। वेश्या को मुक्त नारी माना जाता था। हिन्दू-शास्त्रकारों के विपरीत बुद्ध की दृष्टि महिलाओं के प्रति संकीर्ण नहीं थी।

आर्थिक स्थिति

ई.पू. छठी शताब्दी में कृषि ही मुख्य व्यवसाय था। इस काल में अधिकांश लोग गाँवों में निवास करते थे। लोहे के प्रयोग के कारण कृषि से अधिशेष प्राप्त होने लगा था, जिसने बड़ी बस्तियों के निर्माण में सहायता की। नई उत्पादन तकनीक ने उत्तर-पूर्व भारत की कबायली जीवन-प्रणाली पर भी महत्त्वपूर्ण प्रभाव डाला। नई कृषि प्रणाली के अन्तर्गत कृषि-कार्यों में अधिकाधिक पशुओं की आवश्यकता पड़ने लगी। लोग पशुओं की सुरक्षा की आवश्यकता अनुभव करने लगे। उपनिषदों में भी पशु-वध की निन्दा की गई है। बौद्ध ग्रंथों में पशुओं को सुख देने वाला (सुखदा) तथा अन्न देने वाला (अन्नदा) कहा गया है। कृषि के विकास के साथ-साथ लौह उपकरणों के बढ़ते प्रयोग के कारण अनेक उद्योग-धन्धों एवं शिल्पों का विकास हुआ, जिसके कारण उत्तर भारत में नगरीकरण की प्रक्रिया भी शुरू हुई। पालि ग्रंथों में राजगृह, वैशाली, वाराणसी, चंपा, कौशाम्बी, कुशीनगर, श्रावस्ती तथा पाटलिपुत्र जैसे विकसित नगरों का उल्लेख मिलता है। ई.पू. 600 से 300 के मध्य लगभग 60 नगरों के अस्तिव के प्रमाण मिलते हैं। आहत मुद्राओं के प्रचलन के कारण इस काल में व्यापार का विस्तार हुआ। इस काल में कृषि एवं व्यापार में क्रान्तिकारी विकास के कारण कबायली जीवन की परम्परागत मान्यताएँ टूटने लगीं। इस समय निजी सम्पत्ति को भी मान्यता प्राप्त हुई। अब सम्पत्ति का संचय पशुओं के अतिरिक्त उत्पादन, व्यापार एवं कृषि के रूप में भी किया जा सकता था। बौद्ध ग्रंथों में उल्लेख मिलता है कि धन का उपार्जन न करने से निर्धनता का प्रादुर्भाव होता है तथा निर्धनता से ही चोरी, झूठ, हिंसा, क्रूरता एवं घृणा जैसे दोष उत्पन्न होते हैं। इसके समाधान के लिए बुद्ध यह कहते थे कि किसानों को बीज एवं अन्य सुविधाएं, व्यापारियों को धन तथा श्रमिकों को उचित पारिश्रमिक देना चाहिए। इस काल में वैदिक समाज की कई मान्यतायें आर्थिक प्रगति के प्रति अनुकूल नहीं थी। समाज में वैश्यों का स्थान तीसरा था। वैदिक परंपरा के विपरीत बौद्ध परंपरा में समुद्री व्यापार की निन्दा नहीं की गई, जिसके कारण वैश्य वर्ग ने बौद्ध धर्म के प्रति अपना झुकाव प्रकट किया। इस बात की पुष्टि साँची के स्तूप में वर्णित दृश्यों से भी होती है। बुद्ध के समय में 'अनाथपिण्डिक' तथा यश जैसे प्रसिद्ध श्रेष्ठी (वैश्य) बौद्ध धर्म में दीक्षित हुए थे। बौद्ध धर्म की अहिंसावादी शिक्षाएँ साम्राज्यवादी युद्धों के विपरीत थी, क्योंकि युद्धों में सबसे अधिक हानि व्यापारियों को ही होती थी। इस काल में धनी वर्ग को ऐसे नियमों तथा सिद्धातों की आवश्यकता थी, जो व्यक्तिगत सम्पत्ति की सुरक्षा के अधिकार को मान्यता प्रदान करें। बौद्ध धर्म का अस्तेय (चोरी न करना) सम्पत्ति के अधिकार को अप्रत्यक्ष रूप से समर्थन देता है। बौद्ध संघ में ऋणी व्यक्ति का प्रवेश वर्जित था। इस काल के ब्राह्मण विधि-निर्माताओं ने सूद एवं ब्याज प्रथा की निन्दा की है। बौद्ध ग्रंथों में भी इस प्रथा के बारे में उल्लेख मिलता है, परन्तु बौद्ध ग्रंथों में सूद एवं ब्याज प्रथा की निन्दा नहीं की गई। बौद्ध धर्म की मान्यताएँ शहरीकरण की प्रक्रिया में काफी सहायक थी। प्रसिद्ध इतिहासकार रामशरण शर्मा के अनुसार बौद्ध धर्म के सिद्धांत नगरीय जीवन के अधिक अनुकूल थे।

राजनीतिक स्थिति

ई.पू. छठी शताब्दी में भारत में कोई सर्वोच्च सत्ता नहीं थी। भारत अनेक छोटे-छोटे राज्यों में विभक्त था। इस समय राजतंत्रीय एवं गणतंत्रीय दोनों प्रकार के राज्य विद्यमान थे। 'बौद्ध भारत' नामक अपनी पुस्तक में प्रो. रिड्स डेविड्ज ने 16 महाजनपदों के नाम दिए हैं—अंग, मगध, काशी, कौसल, वज्जी, मल्ल, चेदी, वत्स, कुरू, पांचाल, मत्स्य, शूरसेन, अश्मक, अवन्ति, गांधार तथा कम्बोज। व्यापारियों को सुरक्षित व्यापार मार्गों की आवश्यकता थी, जो सिर्फ एक विस्तृत एवं सुदृढ़ राज्य ही उपलब्ध करवा सकता था।

धार्मिक स्थिति

ई.पू. छठी शताब्दी की धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थिति ने भी बौद्ध धर्म के उदय में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। वैदिक मंत्रों को देव वाक्य माना जाता था। लोगों में यह धारणा प्रचलित थी कि यज्ञों में त्रुटि होने पर भयंकर परिणाम भुगताने होंगे। ब्राह्मणों की धन-लोलुपता तथा लालची प्रवृत्ति समाज के लिए कष्टदायक होने लगी। यज्ञ तथा कर्मकाण्ड नीरस, जटिल तथा आडम्बरपूर्ण हो गये। यज्ञों में पशुओं की अत्यधिक बलि दी जाती थी। यज्ञ प्रणाली को महिमा मण्डित करते हुए यह प्रचार किया गया कि यज्ञ के द्वारा ही स्वर्ग की प्राप्ति संभव है। ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति का मूल कारण भी यज्ञ को ही माना गया। परन्तु बुद्ध ने यज्ञों तथा जटिल कर्मकाण्डों का जमकर विरोध किया। यज्ञों में पशुओं की बलि चढ़ाने के लिए किसानों से बिना मूल्य चुकाए उनके पशु छीन लिए जाते थे। इस काल में वैदिक धर्म मूलत: कर्मवादी एवं ग्रहस्थ प्रधान ही बना

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

रहा। जिन उपदेशकों एवं आचार्यों ने वैदिक धर्म का विरोध किया था, उनमें से अधिकांश संन्यासी जीवन के समर्थक थे। ई.पू. छठी शताब्दी में अनेक सम्प्रदाय अस्तित्व में आ चुके थे और इन सभी में कार्य-कारण सम्बन्धी धारणा कार्य कर रही थी, जिससे यह सिद्धांत विकसित हुआ कि प्रकृति में सदैव ही कार्य-कारण सम्बन्ध कार्यरत है तथा इसमें कोई भी परिवर्तन नहीं कर सकता। महावीर के समान ही बुद्ध के सामने भी प्रमुख समस्या वैदिक धर्म की कुरीतियों पर प्रहार करने की थी। वैदिक धर्म की जीर्ण-शीर्ण परंपराओं एवं विभिन्न परिव्राजकों के अव्यवस्थामूलक उपदेशों के बीच समाज को एक समाधान की आवयश्कता थी। बौद्ध धर्म ने त्याग एवं संन्यासप्रधान जीवन को अधिक महत्त्व दिया। बुद्ध ने वेदों को अकाट्य प्रमाण नहीं माना। बौद्ध धर्म में सार्वभौम ईश्वर की कल्पना नहीं की गयी है। बुद्ध यह मानते थे कि किसी भी तथ्य को परीक्षण के बाद ही स्वीकार करना चाहिए। बुद्ध ने वैदिक कर्मकाण्डों को भी अस्वीकार कर दिया। बौद्ध ग्रंथों में कहा गया है कि लोग पशु-वध के कारण पुरोहितों की निन्दा करते हैं।

बौद्ध धर्म का उदय एवं विकास

धार्मिक आंदोलन (ई.पू. छठी शताब्दी) का सर्वाधिक प्रबल रूप हमें बौद्ध धर्म की शिक्षाओं तथा सिद्धांतों में देखने को मिलता है। बौद्ध शिक्षाएँ एवं सिद्धांत पालि त्रिपिटक में संकलित हैं। भगवान बुद्ध ने मध्यम मार्ग को श्रेष्ठ बताया। बौद्ध धर्म का मूलाधार चार आर्य सत्य हैं। ये हैं–दुख, दुख समुदाय, दुख निरोध तथा दुख विरोध गामिनी-प्रतिपदा अर्थात अष्टांगिक मार्ग। भगवान बुद्ध ने संसार की सभी वस्तुओं को दुखमय बताया। बुद्ध ने दुख उत्पन्न होने के अनेक कारण बताये तथा इन सभी कारणों को मूल तृष्णा को बताया। तृष्णा से ही आसक्ति तथा राग का उद्‌भव होता है। दुख के निवारण के लिए तृष्णा का उन्मूलन आवश्यक है। बुद्ध ने दुख निरोध के लिए अष्टांगिक मार्ग का विधान किया है, ये आठ मार्ग हैं–1. सम्यक दृष्टि, 2. सम्यक संकल्प, 3. सम्यक वाणी, 4. सम्यक आजीव, 5. सम्यक कर्म, 6. सम्यक व्यायाम, 7. सम्यक स्मृति तथा 8. सम्यक समाधि। बुद्ध ने इस मार्ग के अन्तर्गत अधिक सुखपूर्ण जीवन तथा अधिक काया-क्लेश दोनों को वर्जित किया है। बुद्ध ने मध्यम मार्ग का उपदेश दिया। बौद्ध धर्म सृष्टि का रचयिता ईश्वर को नहीं मानता। बुद्ध ने ईश्वर के स्थान पर मानव की प्रतिष्ठा पर अधिक बल दिया है। बौद्ध धर्म में जन्म का कारण कर्मफल उत्पन्न करने वाला अज्ञान रूपी चक्र है, जिसे प्रतीत्यसमुत्पाद कहा जाता है। इस चक्र के 12 क्रम हैं–1. अविद्या, 2. संस्कार, 3. विज्ञान, 4. नाम-रूप, 5. तडायतन, 6. स्पर्श, 7. वेदना, 8. तृष्णा, 9. उपादान, 10. भव, 11. जाति और 12. जरा-मरण। बौद्ध धर्म के अनुसार व्यक्ति के जीवन का परम लक्ष्य निर्वाण प्राप्ति है। निर्वाण अष्टांगिक मार्ग के अनुशीलन से ही प्राप्त किया जा सकता है। बुद्ध ने नैतिक जीवन का आधार दस शीलों को माना है। ये दस शील हैं–1. अहिंसा, 2. सत्य, 3. अस्तेय (चोरी न करना), 4. व्याभिचार न करना, 5. मद्य सेवन न करना, 6. असमय भोजन न करना, 7. आरामदायक बिस्तर पर न सोना, 8. धन संचय न करना, 9. ब्रह्मचर्य का पालन करना तथा 10. स्त्रियों का संसर्ग न करना।

बौद्ध संघ बौद्ध त्रिरत्न का एक अनिवार्य अंग है। संघ आदर्शमय जीवन का केन्द्र था, जिसके कारण समाज में इसे आदर प्राप्त था। इसके अतिरिक्त संघ धर्म प्रचार का भी महत्त्वपूर्ण साधन हो गया था। संघ की कार्यप्रणाली गणतान्त्रिक आधार पर निर्मित थी। संघ में छोटे-बड़े का कोई भी भेद नहीं था। कालान्तर में बौद्ध धर्म में दो सम्प्रदायों का उदय हुआ– 1. हीनयान, 2. महायान। दोनों सम्प्रदायों में निर्वाण के उद्देश्य को लेकर मतभेद था। हीनयान सम्प्रदाय यह मानता है कि निर्वाण का उद्देश्य दुखों का अन्त करना है, जबकि महायान सम्प्रदाय के अनुसार निर्वाण का उद्देश्य केवल दुखों से मुक्ति नहीं है, बल्कि पूर्ण ज्ञान प्राप्त करना भी है। हीनयान में बौद्ध मत का प्राचीन रूप देखने को मिलता है। यह सम्प्रदाय ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास नहीं करता, बल्कि 'कम्म' एवं 'धम्म' को ही सब-कुछ मानता है। हीनयान सम्प्रदाय का लक्ष्य निर्वाण प्राप्त करना है। हीनयान के अनुसार मनुष्य अपने प्रयासों से ही निर्वाण प्राप्त कर सकता है। बुद्ध भी कहते थे कि परिश्रम के द्वारा अपनी मुक्ति का उपाय करना चाहिए। हीनयान सम्प्रदाय दक्षिण भारत, श्रीलंका, बर्मा, थाईलैण्ड में अधिक प्रचलित हुआ। वैभाषिक एवं सौत्रान्तिक हीनयान सम्प्रदाय की दो प्रमुख शाखाएँ हैं। महायान सम्प्रदाय में बुद्ध के लोक-कल्याण सम्बन्धी उपदेशों को ही प्रमुख समझा गया। महायान सम्प्रदाय यह मानता है कि केवल अपनी मुक्ति का ही प्रयास नहीं करना चाहिए, बल्कि दूसरों की मुक्ति के लिए भी हमें प्रयास करना चाहिए। यह माना गया है कि लोक-कल्याण की भावना विद्यमान होने के कारण महायान महान है तथा हीनयान में इसका अभाव है, इसलिए हीनयान हीन है। महायान सम्प्रदाय तिब्बत, चीन तथा जापान में प्रचलित है। महायान की भी दो शाखाएँ हैं–'योगाचार' या 'विज्ञानवाद' तथा 'माध्यमिक' या 'शून्यवाद'। माध्यमिक बाहरी या मानसिक किसी वस्तु का अस्तित्व नहीं मानते, इसलिए इसे शून्यवाद भी कहा जाता है। महाकवि अश्वघोष भी शून्यवाद के समर्थक थे। चतुर्थ बौद्ध संगीति कश्मीर के कुण्डल वन विहार में आयोजित की गयी थी। इसके अध्यक्ष वसुमित्र तथा उपाध्यक्ष अश्वघोष थे।

अश्वघोष : जीवनी, स्थितिकाल एवं कृतित्व

जीवनी

अश्वघोष बुद्ध के जीवन चरित को संस्कृत में लिखने वाले प्रथम महाकवि थे। अश्वघोष साकेत के निवासी तथा आर्य सुवर्णाक्षी के पुत्र थे। नालंदा अश्वघोष आर्य देव से शास्त्रार्थ में पराजित हुए। इसके बाद अश्वघोष ने वैदिक धर्म-ग्रंथों को त्यागकर

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

बौद्ध धर्म की दीक्षा ले ली। आर्यदेव ही अश्वघोष के प्रथम गुरु थे। बाद में उन्होंने भदन्त पार्श्व को भी अपना गुरु बनाया। भदन्त पार्श्व ने ही अश्वघोष को बौध धर्म में दीक्षित किया। चीनी धर्म पिटक में अश्वघोष को पुण्य का शिष्य बताया गया है।

स्थितिकाल

अश्वघोष के स्थितिकाल के सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद है। परन्तु अधिक संभावना यही है कि अश्वघोष कुषाण सम्राट कनिष्क (78 ई.) के समकालीन थे। चीनी परंपरा के अनुसार अश्वघोष कनिष्क के दीक्षा गुरु थे। उन्होंने ही कनिष्क के राज्यकाल में 'अभिधर्मपिटक' की 'विभाषा' नामक व्याख्या लिखी थी। डॉ. जौन्स्टन कहते हैं कि मातृचेट अपनी रचनाओं के सन्दर्भ में अश्वघोष से प्रभावित था। मातृचेट कनिष्क का समकालीन था। इससे यह संभावना बनती है कि अश्वघोष कनिष्क से पूर्व थे, परन्तु यही मानना अधिक तर्कसंगत है कि मातृचेट एवं अश्वघोष समकालीन थे। डॉ. हरप्रसाद शास्त्री तथा बलदेव उपाध्याय के अनुसार अश्वघोष का समय ईसा की प्रथम शताब्दी का अन्तिम भाग है। डॉ. राधाकृष्णन ने अश्वघोष को कनिष्क का धार्मिक गुरु माना है। पी.वी. काणे ने बुद्धचरित की रचना का समय प्रथम अथवा द्वितीय शताब्दी माना है। काणे के अनुसार इस ग्रंथ का चीनी भाषा में अनुवाद 414-421 ई. के मध्य हुआ था। अत: इसकी रचना तीसरी शताब्दी के बाद तो कदापि नहीं हो सकती। अत: अश्वघोष को कनिष्क का समकालीन मानना ही तर्कसंगत प्रतीत होता है।

प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग के अनुसार पूर्व में अश्वघोष, दक्षिण में देव, पश्चिम में नागार्जुन तथा उत्तर में कुमारजीव ये चार बौद्ध धर्म के आचार्य थे। एक चीनी परंपरा के अनुसार अश्वघोष चौथी बौद्ध संगीति, जो कनिष्क द्वारा कश्मीर के कुण्डलवन में बुलाई गई थी, में उपसभापति थे। महाप्रज्ञापारमिताशास्त्र नामक ग्रंथ का चीनी अनुवादक अश्वघोष का समय सांग इंग की निर्वाण तिथि के 500 वर्ष बाद स्वीकार करता है। अश्वघोषकृत 'बुद्धचरित' का चीनी अनुवाद 5वीं शताब्दी में किया गया था, इसलिए अश्वघोष का समय 5वीं शताब्दी ई. मानना ही अधिक उचित प्रतीत होता है। चीनी रत्नपिटक में उल्लेख है कि अश्वघोष, माटर तथा चरक कनिष्क की राजसभा में थे। 'कु-का-त्से-पिन-चयुन-किंग' नामक पुस्तक से भी इन तीनों विद्वानों की कनिष्क की राजसभा में उपस्थिति का उल्लेख मिलता है।

उपर्युक्त तर्कों के आधार पर अश्वघोष को कनिष्क का समकालीन मानना ही अधिक तर्कसंगत है। यद्यपि कनिष्क का काल भी विवादग्रस्त है। ओल्डेनबर्ग, फर्ग्युसन, सैमुअल, पील तथा हेमचन्द्र राय चौधरी के अनुसार कनिष्क के राज्यारोहण की तिथि 78 ई. है। अत: महाकवि अश्वघोष का समय भी 78 ई. ही मानना होगा। डॉ. लाहा के अनुसार, 'अश्वघोष को प्रथम शताब्दी ई.पू. में रखना असंगत न होगा।'

कृतित्व

महाकवि अश्वघोष की रचनाओं के सम्बन्ध में भी विद्वानों में पर्याप्त मतभेद है। चीनी त्रिपिटक में उनकी 8 पुस्तकों के चीनी अनुवाद मिलते हैं। बुन्यु मुंज्यु ने उनके 6 तथा तिब्बती परंपरा में उनके 11 ग्रंथ माने गये हैं–(1) गण्डीस्तोत्रगाथा, (2) अष्टविघ्नकथा, (3) दशकुशलकमर्थपथनिर्देश, (4) परमार्थबोधिचित्तभावनक्रम-वर्ण-संग्रह, (5) बुद्धचरित महाकाव्य, (6) मणिदीपमहाकारुणिक-देवतंचस्तोत्र, (7) वज्रयानमूलापत्तिसंग्रह, तथा (8) शतपञ्चशतकनाम-स्तोत्र, (9) शोकविनोदन, (10) सम्वृत्तिबोधिचित्तभवनोपदेशवर्ण-संग्रह, तथा (11) स्थूलापत्ति। परन्तु विद्वान उनके पाँच ग्रंथों पर एकमत हैं–

(1) बुद्धचरित–यह एक महाकाव्य है, जो 28 सर्गों में विभाजित है। इसमें बुद्ध के जीवन, उपदेश तथा सिद्धान्तों का काव्यात्मक वर्णन है। भगवान बुद्ध के जीवन एवं कार्यों पर लिखा गया यह संस्कृत का प्रथम महाकाव्य है। इसमें अश्वघोष ने बुद्ध के जीवन की घटनाओं का बड़ा ही रुचिकर वर्णन किया है। तिब्बती अनुवाद में इस ग्रंथ के 28 सर्ग हैं, परन्तु संस्कृत में केवल 17 सर्ग ही हैं। अश्वघोष कहता है कि उसने इस ग्रंथ की रचना मानवों के सुख और कल्याण के लिए तथा बुद्ध के प्रति श्रद्धाभाव से की है।

(2) सौन्दरनन्द–यह 18 सर्गों का एक महाकाव्य है। इसमें काम एवं धर्म के प्रति प्रेम के विषम संघर्ष को भव्य भाषा में चित्रित किया गया है। सौन्दरनंद में भगवान बुद्ध के भाई नन्द तथा उसकी पत्नी सुन्दरी की कथा है। नन्द और सुन्दरी एक-दूसरे के प्रति आसक्त हैं, इसी प्रेम की आधारभूमि को लेकर नन्द की प्रव्रज्या का वर्णन इसमें अश्वघोष ने किया गया है। पं. बलदेव उपाध्याय के अनुसार, विषय की गंभीरता तथा भावना के अंकन में सौन्दरनंद बुद्धचरित की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ रचना है। अश्वघोष के काव्य सृजन का उद्देश्य पथभ्रष्ट मानव की जन्म-जरा-व्याधि एवं मृत्यु रूपी दुख संस्तरण हेतु तथा सुख की प्राप्ति हेतु एक सुदृढ़ उपदेश सेतु का निर्माण करना है। इसी कारण अश्वघोष ने सौन्दरनंद के अन्तिम छ: सर्गों में बौद्ध धर्म का सुन्दर आख्यान किया है। 13वें सर्ग में कवि ने शील एवं इन्द्रिय संयम का वर्णन किया है।

(3) शारिपुत्र-प्रकरण–इसमें शारिपुत्र की बौद्ध धर्म में दीक्षा का प्रसंग नाटकबद्ध किया गया है। इसकी लेखन शैली बुद्धचरित एवं सौन्दरनंद से मिलती है। यह प्रकरण देश के बाहर भी काफी लोकप्रिय हुआ।

4. सूत्रालंकार–इसमें जातक कथाओं से ली गई कथाओं का संग्रह है। इसका चीनी भाषा में अनुवाद 405 ई. में कुमार जीव ने किया था।

www.neerajbooks.com